सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

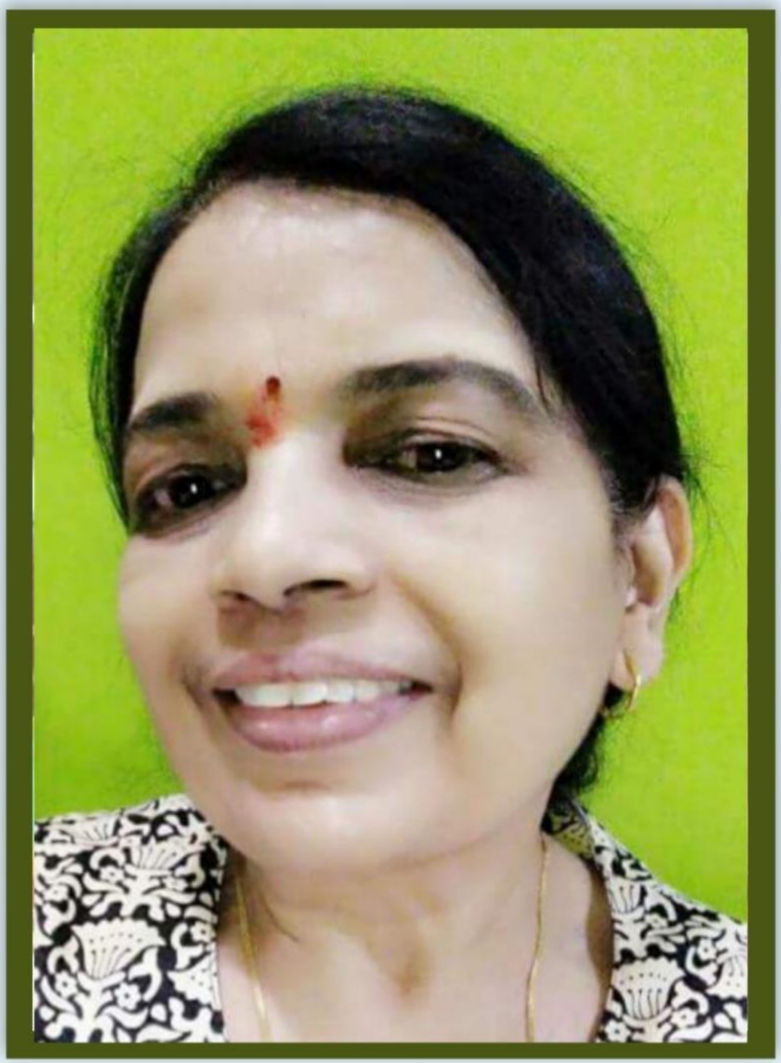

केन्द्रीय रचनाएँ

●मीरा भार्गव

सृजक-सृजन-समीक्षा

मीरा भार्गव 'सुदर्शना'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर,

इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: **४०.०० रुपये**

आवरण: **मृदुल जोशी**

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, **वारासिवनी**

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नही |

अन्तरा-शब्दशक्ति में प्रस्तुत

"सृजक"

मीरा भार्गव का परिचय

नाम-मीरा भार्गव

पिता जी का नाम-स्व. श्री प्रेमकिशोर जी भार्गव

माता जी का नाम-.स्व. श्रीमती चन्द्रकान्ता भार्गव

जन्मतिथि ...1 मार्च

शिक्षा ....एम ए .समाजशास्त्र ,हिन्दी साहित्य विशारद

शौक ....अध्यन ,लेखन ,समाज सेवा ,

रूचि ....धर्म अध्यात्म

पद .....संस्थापिका /अध्यक्ष सुदर्शना लेडीज क्लब कटनी

संस्था के उद्देश्य ....महिला सशक्तिकरण बाल विकास एवं समाज सेवा महिला सशक्ति करण हेतु ...महिलाओं के शारीरिक मानसिक ,बौद्धिक , सामाजिक,आध्यात्मिक ,सांस्कृतिक ,सर्वांगीण विकास हेतु प्रशिक्षण , प्रोत्साहन पुरुस्कार एवं प्रतिभा प्रदर्शन हेतु मंच तथा अवसर प्रदान किये जाते है ।

बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व विकास हेतु उनकी रुचि और प्रतिभा अनुसार पशिक्षण प्रतियोगिता पुरुस्कार दिये जाते हैं । अवसर और मंच प्रदान किया जाता है ।

भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन हेतु बाल संस्कार एवं संस्कृति क्लासेस का निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है संस्था द्वारा ।

समाजसेवा के अन्तर्गत निर्धन कन्याओं का विवाह ,निर्धन बालक बालिकाओं को शिक्षा के लिये आर्थिक सहयोग ,निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण

चिकत्सा शिविरो का आयोजन स्कूलो में निर्धन बच्चों को ड्रेस बस्ता ऊनी वस्त्र वितरण स्कूलों की डिमाण्ड अनुसार अनाथाश्रम ,वृद्धाश्रम में आवश्यकता अनुसार सहयोग संस्था द्वारा किया जाता है ।
सुदर्शना कटनी जिले की सबसे बड़ी और सर्वाधिक लोकप्रिय संस्था है ।
125 उच्चशिक्षित महिलायें इसकी सदस्य हैँ ।
सुदर्शना अनेकता में एकता और भारतीय संस्कृति की अनोखी झाँकी है इसमें 5 वर्ष से लेकर 85 वर्ष तक की सभी जाती और समाज की सभी क्षेत्रों की महिलायें सदस्य है ।
1 दिसम्बर 1995 को इसका शुभारम्भ भार्गव कम्पाउंड में हुआ था आज भी वंही से अर्थात मेरे घर से संचालित है ।
उपलब्धियां .... अपने जीवन से निराश. सैकड़ो महिलायें आज अपने पैरो पर पर खड़ी है अपना स्वयं का रोजगार कर अपना खुशहाल जीवन जी रही हैं । सुदर्शना द्वारा अब तक लगभग 50 निर्धन कन्याओ का विवाह कराया जा चुका है । सैकड़ो महिलाओ को इलाज़ काउंसिलिंग कर उन्हें अच्छा जीवन जीने के प्रेरित और उत्साहित किया आज वह सब सामान्य और खुशहाल जीवन जी रही हैं । यह सब विगत 21 वर्षो से बिना किसी शासकीय सहायता के मेरे अपने परिवार और सदस्यों के सहयोग से और ईश्वर की कृपा से निर्बाध चल रहा है
पुरुस्कार .....संस्था के प्रथम वर्ष में ही महिलाओँ के लिये समन्वित कार्य करने हेतु 26 जनवरी को सम्मानपत्र देकर समाजसेवा के क्षेत्र में अग्रणी संस्था घोषित किया गया ।
कटनी जिले की सभी संस्थाओ द्वारा समाज सेवा के लिये मुझे अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मानित और पुरुस्कृत किया गया । जैसे अखिल भारतीय शान्ति कुञ्ज हरिद्वार द्वारा नारी चेतना जागरण हेतु विशाल महिला जागरण कार्यक्रम में कटनी जिले से मुझे चुना गया और पुरुस्कृत और सम्मानित किया गया ।

ब्राह्मण महिला मण्डल द्वारा सम्मानित पुरुस्कृत किया गया ।
ब्राह्मण समाज द्वारा सम्मानित पुरुस्कृत किया गया ।
माननीय मुख्य मन्त्री शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा
विशाल सामाजिक समारोह में समाजसेवा के लिये सम्मानित पुरुस्कृत किया गया ।
लायनेस क्लब द्वारा सम्मानित पुरुस्कृत किया गया अनेको बार
जायंट्स क्लब द्वारा सम्मानित पुरुस्कृत।
अंतर्राष्टीय महिला दिवसपर विभिन्न समाचार पत्रो द्वारा पत्रकारिता सम्मान दिया गया ।
विशिष्ट परिशिष्ट में नवभारत समाचार पत्र अनेको बार सम्मानित किया गया ।
दैनिक भास्कर समाचार द्वारा अनेको बार सम्मानित किया गया ।
पत्रिका समाचार पत्र द्वारा अनेको बार सम्मानित किया गया ।
बारडोली समाचार पत्रो द्वारा अनेको बार सम्मानित किया गया ।
नगर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओ द्वारा सम्मान होता रहता है ।
आकाश वाणी जबलपुर द्वारा निरन्तर लेख कविताओ का प्रसारण ।
सुदर्शना वीथिका का प्रकाशन सम्पादन
विभिन्न समाचार पत्रो में लेख कविताओ का प्रकाशन ।
अभी दिनाँक 23 अप्रैल को मध्यप्रदेश राज्य महिला आयोग के स्थापना दिवस पर पूरे मध्ययप्रदेश से 10 महिलाओं को विशिष्ट कार्यो के लिये भोपाल में महिला बालविकास मंत्री श्रीमती अर्चना चिटनवीस जी द्वारा सम्मानित और पुरुस्कृत किया उन दस महिलाओं में एक नाम मेरा भी है।

मीरा भार्गव 'सुदर्शना'

"सृजक का सृजन"

काम वाली बाई

पीड़ित होती है
प्रताड़ित होती है
नकारा पति के
हाथो अपमानित
होती है पर क्ष
घर नही छोड़ती है ।

चिड़ियों की चहचहाट
सुनकर भोर होते ही अपनी
उनींदी आँखों को मलती
बोझिल तन और मन लिये
उठती ।
पास ही सोये कुनमुनाते
बच्चों पर ममता भरी
नज़र डालकर
पल्ला अपनी कमर में लपेट
कर लडखडाती सी चल पड़ती
और सीधे रसोई और
चूल्हे में घुसती है ।
बच्चों के खाने की
व्यवस्था कर ,
बिना खाये पिये

काम के लिए निकलती है ।

जरा सी देर होने पर
खरी खोटी सुनती है
सिर झुका कर
अपनी गीली आँखों
को पोंछ्ती
काम में जुट जाती है ।
चार छह घरो का
काम निपटाकर
थकान से चूर
भूखी प्यासी
घर लौटती है ।

माँ माँ कहते बच्चे
दौड़कर लिपट जाते
तब श्रम साध्य मलिन
मुखण्डल पर आनंदमिश्रित
मुस्कान छा जाती
अपना सारा दुःख दर्द
अपमान भूल कर निहाल
हो जाती ।
चूमती चाटती बच्चों को
नहलाती धुलाती
फिर खुद नहा कर
भोजन बनाने लग जाती ।

नकारा पति घर में बैठा
सब देखता और पत्नी से
प्यार और सम्मान की
उम्मीद करता ,न मिलने पर
अपना गुस्सा मार पीट
गाली गलौंच कर बीबी
बच्चों पर निकालता ।

अपनी किस्मत को कोसती
रोती अपनी आँखे पोंछ्ती
मार खाती अपने बच्चों
को आँचल में छिपाती
पति से बचाती ।

भोजन बनाती चुपचाप
सबको खिलाती और
बचे कुचे दो चार निवाले
मुँह में डाल फिर
काम पर निकल जाती ।

नारी होने का दण्ड
माँ होने की विवशता
सब कुछ सहन कर जाती
अपना घर बचाती
अपना धर्म निभाती
काम वाली बाई कहलाती ।

पतित पावनी गंगा मैय्या
पार लगाती सबकी नैय्या

भेद भाव ना मन में लाती
सबको अपने गले लगाती
माँ जैसे सबको अपनाती
कल कल छल छल बहती मैय्या ।

पतित पावनी गंगा मैय्या ।
पार लगाती सबकी नैय्या ।

नीच अधम पापी हो कितना
करती नही किसी से घिरना
पिलाती उसको अमृत अपना
प्यार सभी से करती मैय्या ।

पतित पावनी गंगा मैय्या ।
पार लगाती सबकी नैय्या ।

जलचर वनचर सबको पाले
भर भर देती सबको प्याले
मईया तेरे रूप निराले
सबकी पालनहारी मैय्या ।

शिवशंकर के शीश विराजे ।
ऋषि मुनियों के मन अति भावे ।
सुर नर मुनि सब जन यश गावें
ममता की मूरत है मैय्या ।

सायली छन्द .....

मानव
कर रहा
प्रकृति को रुष्ट
झेलना पड़ेगा
कष्ट ।

इतना
देती है
प्रकृति फिर भी
कृतघ्न है
मानव ।

समझता
क्यों नही
अपने पैरों पर
कुल्हाड़ी मत
मार ।

उपकार
नही मानता
छेड़ता रहता है
काटता वन
महामूर्ख ।

पाप
कुछ लोग
करते हैं और
भोगते बहुत
लोग ।

धैर्य
की परीक्षा
मत ले मानव
बहुत ही
पछतायेगा ।

धरती
माता है
हम सभी की

इसका सम्मान
करो ।

दोहत्रयी

मनमोहन की प्रीत से ,मन में उपजे गीत ।
सारा जग झूठा लगे ,मोहन लगते मीत ।।

वृन्दावन की गोपियाँ,करती हैं परिहास
कान्हा के संग राधिका ,बहुत रचाये रास ।।

हृदय चुराया श्याम ने बांका है चितचोर ,
रूप सलोना देख के ,नाच उठा मनमोर ।।

सुदर्शना

बहुत सताये बहुत रुलाये
गीतसावन बैरी तनिक न भाये ।

लिख लिख भेजी तोहे पतियाँ ।
सूनी - सूनी बीती रतियाँ ।
ओ निर्मोही काहे न आये
बहुत रुलाये बहुत सताये

सावन बैरी तनिक न भाये ।

साखियॉ सारी झूला झूलें
पवन झकोरा लेत हिलोरें
हिल मिल कर सब कजरी गायें
बहुत सताये बहुत रुलाये

सावन बैरी तनिक न भाये ।

बाट निहारूँ बैठ झरोखा ।
जाने किसने तुमको रोका ।
मोरे नयना भर-भर आये
बहुत सताये बहुत रुलाये ।

सावन बैरी बहुत सताये ।

"सृजन की समीक्षा"

1.

पहली और सरसरी नज़र में "**काम बाली बाई**" अंतरा की इस पोस्ट की केंद्रीय रचना है ,मेरी दृष्टि में ! लगता है शोषित वंचित महिलाओं के लिए काम करते करते रचनाकार ने गहरा तादात्म्य स्थापित कर लिया है, समाज के अंतिम छोर पर बसी औरत की बिसङ्गतियों और दुश्वारियों को शिद्दत से उभरा है । **औरत की जीवटता का व सन्त्रास का बिम्ब प्रभावी ढंग से पेश किया है । बधाई,...**

राजू उपध्याय

2.

केंद्रीय रचनाकार आदरणीया मीरा भार्गव जी को अशेष **शुभकामनाएं,**

स्त्री होना भर ही सृष्टि का सबसे बड़ा सम्मान है

इसी बात पर सत्यता की मोहर लगाती आप जैसी रचनाकार का पटल पर होना गौरव का विषय है|

1. **काम वाली बाई**

रचना में स्त्री द्वारा ही स्त्री के उस अधूरे तंज पर सृजन करना बेहद ही संजिदगी का काम है...

श्रेष्ठ रचना, जिसमें उस अबला के नकारा पति के होने के बावजूद जीवन की जद्दोहद को आपने समझाया, यह बहुत ही प्यारे भावों की अभिव्यक्ति हैं| साधुवाद....

2. माँ गंगा की श्रेष्ठता का वर्णन अप्रतिम...

3. सायली छन्द..

हिन्दी की कई विधाएं दम तोड़ रही है, उसमें से एक छन्द विधा भी है... परन्तु आपने श्रेष्ठ सायली छन्द लिखकर साबित कर दिया कि जबतक आप जैसे रचनाकार जिन्दा है, विधाएं दम नहीं तोड़ेगी...

4. दोहत्रयी भी अब पढ़ने को कम मिलती है....

रचना सुन्दर है.. अन्ततः सभी रचनाएं सम्पूर्णता का बोध कराती है.... **अभिनंदन**...

एक और प्रश्न- आपका उपनाम **सुदर्शना** है, क्या कारण है सुदर्शना नाम रखने का?

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

3.

मीरा जी का हार्दिक अभिनंदन

आपके सामाजिक सरोकार के प्रति समर्पण अति प्रशंसनीय है।

महिला उत्थान हेतु आपकी साधना का प्रतिबिंब रचनाओं में भी स्पष्ट है।

'**काम वाली बाई** 'नारी के शोषण का छिद्रान्वेषण है।

गंगा के प्रति आस्था और उपकार की मान्यता कवि हृदय का मर्म है

कविता में सर्वथा मौलिकता सृजन का शृंगार है।

आपके लिए बहुत बहुत हार्दिक शुभ कामनाएँ।

प्रदीप सोनी 'शून्य'

4.

अंतरा के मंच पर केंद्रीय रचनाकार के रूप में मीरा भार्गव का **अभिनंदन**!

बहुत ही प्रेरक आत्मकथ्य।**सुदर्शना लेडीज क्लब की संस्थापिका/अध्यक्ष होने के साथ १२५ महिला सदस्यों के साथ मिलकर बहुत ही प्रेरणादायक व अनुकरणीय कार्य कर रही हैं।** समाज के विकास के लिए आज ऐसे ही नागरिकों की आवश्यकता है जो स्वयं ऐसे कार्य करके औरों के लिए प्रेरणा बनें। धन्य हैं आप और आपकी संस्था की सभी सदस्याएँ।मिले हुए सम्मान आपके काम को और विशिष्टता प्रदान कर रहें हैं। इसके साथ ही सुदर्शना वीथिका का प्रकाशन एवं सम्पादन, अपना मौलिक सृजन.... कैसे इतना सब कर लेती हैं?

काम वाली बाई.... रचना बाई का एक जीवंत चित्र प्रस्तुत कर रही है। वास्तव में इन्हें ऐसी ही स्थितियों में जीना और काम करना पड़ता है। पतित पावनी... गंगा के महत्व को दर्शाती है तो सायली छंदों में पर्यावरण के प्रति चिंता दिखाई देती है।

दोहात्रयी में कान्हा के चितचोर रूप के दर्शन हैं तो बहुत सताये बहुत रुलाये...में पिया के बिना बैरी सावन के न भाने का सजनी के मन की स्थिति का चित्रण।

सेवा कार्यों की व्यस्तता के साथ लेखन का निर्बाध गति से चलना सुर निरंतर चलना... सुंदर सामंजस्य का ही परिणाम है।

आपके इन दोनों कार्यों की यात्रा इसी तरह चलती रहे... यही कामना।

डा० भारती वर्मा बौड़ाई

5.

मीरा भार्गव जी सम्मानिया मीरा भार्गव जी का पटल पर अभिनंदन है| प्रभावी परिचय | नारी शक्ति के लिए कार्यरत व्यक्तित्त्व सदा सनातन हैं, पटल पर प्रतिध्वनियाँ भी ध्वनियों को नीति का इंद्रासन प्रदान कर जाती हैं, जिससे कोलाहल पर विजय प्राप्त की जा सकती है, यही भाव आपके आत्मकथ्य से प्रासंगिक और प्रकट हो रहा है | आपकी रचनाओं में आपने जैसे काम वाली बाई जिसमें उस उपेक्षित रूपक की पीड़ा को उजागर कर जस नाम तस वर्णन किया है, माँ माँ कहते बच्चे दौड़कर लिपट जाते तब श्रम साध्य मलिन मुखण्डल पर आनंदमिश्रित " बेहतरीन सृजन है| दूसरी रचना में सायली छन्द को समाहित करके विधा की गंभीरता को सशक्तता से प्रस्तुत किया है | तीसरी प्रस्तुति दोहत्रयी भी बेहद नवीनता के साथ प्रस्तुत किया हैं आपने | चौथी रचना सुदर्शना जिसकी पंक्तियाँ बहुत सताये बहुत रुलाये गीत सावन बैरी तनिक न भाये। बेहद ही संवेदनशील और भाव युक्त है| **कुल मिलाकर आपकी रचनाएँ सभी विधान पर सधी हुई है, आप इसीतरह से उत्तरोत्तर उन्नति करें यही कामना है |**

डॉ. प्रीति सुराना, वारासिवनी

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन

१५ नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१

संपर्क: ९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com